Volume: 5 Issue: 8 Pages: 41-43

मध्यप्रदेश के चयनित चीनी उद्योगों के रोकड़ प्रवाह विवरण का विश्लेषणात्मक अध्ययन (मध्य प्रदेश राज्य के संदर्भ में)

[*1] दिनेश कुमार दुबे

[*1] सहायक प्राध्ययापक, वाणिज्य स्वामी विवेकानंद शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, नरसिंहपुर, मध्य प्रदेश, भारत।

Article Info.
E-ISSN: 2583-6528
Impact Factor (QJIF): 8.4
Peer Reviewed Journal
Available online:
www.alladvancejournal.com

Received: 11/July/2026
Accepted: 06/Aug/2026

***Corresponding Author**
दिनेश कुमार दुबे
सहायक प्राध्ययापक, वाणिज्य स्वामी विवेकानंद शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, नरसिंहपुर, मध्य प्रदेश, भारत।

सारांश

भारत का चीनी उद्योग अत्यन्त प्राचीन उद्योग है, जिसे उपभोक्ता जगत का प्रमुख उद्योग भी कहा जाता हैं। इस प्रकार भारत के चीनी उद्योग को बड़े पैमाने के संगठित उद्योग के रूप में गौरव प्राप्त है, क्योंकि भारतीय चीनी उद्योग का उत्पादन की दृष्टि से विश्व में दूसरा स्थान है। चीनी उद्योग में लगभग 3 लाख गन्ना कृषक गन्ना उत्पादित करके अपनी आजीविका चलाते हैं। अतः गन्ना उत्पादन के क्षेत्र में भारत का विश्व में प्रथम स्थान है। भारत में चीनी उद्योग का प्रारम्भ बिहार के डच जाति के लोगों ने किया है। लेकिन भारत के प्रसिद्ध प्राचीन अर्थशास्त्री श्री कौटिल्य ने अपनी पुस्तक 'अर्थशास्त्र' में गन्ने के रस से गुड़ व चीनी तथा शीरे से शराब बनाने का उल्लेख किया है। स्वतंत्रता उपरांत भारत में कुछ बुनियादी उद्योगों में तीव्र गति से प्रगति हुई है, जिसमें चीनी उद्योग भी सम्मिलित है। इन उद्योगों के विकास से न केवल भारत की अर्थव्यवस्था सुदृढ़ हुई वहीं भारत की आर्थिक विकास दर (GDP) में भी वृद्धि हुई है। संयुक्त राष्ट्र औद्योगिक विकास संगठन और ऑक्सफोर्ड के बेसिल ब्लैकवेल के एक साझा अध्ययन से ज्ञात होता है कि वर्ष 1987 में भारत का आर्थिक विकास दर 4.00 प्रतिशत था जो वर्ष 1990 में बढ़कर 5.6 प्रतिशत हो गया वर्ष 2023 में भारत की आर्थिक विकास दर 6.5 के समुतल्य हो गयी। मध्य प्रदेश की प्रमुख 30 चीनी मिलों में से लगभग 10-11 चीनी मिलें नरसिंहपुर जिले में संचालित है | मध्यप्रदेश का लगभग 65% गन्ना नरसिंहपुर जिले में उत्पादित होता है, गन्ने के रूप में कच्चे माल की पर्याप्यता एवं अन्य स्थानीयकरण के कारणों से चीनी उत्पादन की जिले में पर्याप्तता है | चीनी मिलों में कुल गन्ना पिराई का लगभग 10% चीनी प्राप्त होती है इसके अलावा उपोत्पाद (बगास 30%, मोलासिस 5%,प्रेसमड 4% एवं शेष अपशिष्ट दूषित जल के रूप में प्राप्त होता है |

मुख्य शब्द: चीनी उद्योग, औद्योगिक विकास, आर्थिक विकास, उपोत्पाद, गन्ना उत्पादन।

प्रस्तावना:

मध्यप्रदेश में उद्योगों के विकास हेतु प्रचुर मात्रा में संसाधन उपलब्ध हैं। लेकिन कोई वस्तु, पदार्थ का तत्व उसी समय संसाधन है जबकि उसमें मानव की आवश्यकता पूर्ति, कार्य सिद्धि अथवा लाभ प्रदान करने की क्षमता हो। संसाधन एवं उनके उपयोग का अन्य प्राकृतिक तत्वों से सम्बंध होता है। मध्यप्रदेश चीनी उद्योग को भारत के चीनी उद्योग में सबसे बड़े योगदानकर्ताओं में से एक माना जाता है। प्रदेश में चीनी उद्योग में शहर के विभिन्न हिस्सों में स्थित चीनी मिलों का एक समूह शामिल है। भारतीय अर्थव्यवस्था में राजस्व का एक बड़ा हिस्सा चीनी उद्योगों से ही अर्जित होता है। प्रदेश में चीनी उद्योग के लिए प्रमुखत: कच्चा माल गन्ना है। प्रदेश में सर्वाधिक गन्ना उत्पादक जिले नरसिंहपुर, छिंदवाड़ा, बुरहानपुर, बैतूल और दतिया हैं। चूंकि प्रमुख गन्ना उत्पादक क्षेत्र राज्य के पश्चिमी भाग में स्थित हैं, इसलिए अधिकांश चीनी मिलें राज्य के पश्चिमी क्षेत्र में स्थित हैं।

मध्य प्रदेश के जिन क्षेत्रों में चीनी मिलें स्थापित की गई हैं उनमें शिवपुर, नारायणपुरा, करेली, बाबई, बानापुरा, तिमामी, बैतूल, सनावद, भोरवाह, नवलनगर और नेपानगर शामिल हैं। स्वाभाविक रूप से, ये मध्य प्रदेश के वे क्षेत्र हैं जहां पर चीनी का उत्पादन सबसे अधिक किया जाता है। मध्य प्रदेश के जिन जिलों में में कुछ चीनी मिलें जो वास्तव में अच्छा प्रदर्शन कर रही हैं, उन जिलों में बैतूल, होशंगाबाद, खंडवा, रायगढ़, गुना, मुरैना, खरगोन, नरसिंहपुर प्रमुख रूप से शामिल हैं। उक्त जिलों में से शोधार्थी द्वारा नरसिंहपुर में संचालित 3 मिलों को चयनित किया है। चयनित 3 चीनी मिलों में से महाकौशल शुगर मिल, नरसिंहपुर के रोकड़ प्रवाह को विश्लेषित किया गया है।

रोकड़ प्रवाह: नगदिया नगदी के समतुल्य जैसे प्रतिभूति बैंककोष या शीघ्र तरल क्रय में परिवर्तन होने वाली सम्पत्तियों का प्रतिनिधित्व करता है। रोकड़ प्रवाह एक वित्तीय वर्ष में पिछले वर्ष की तुलना में

रोकड़ के प्रवाह को रोकड़ के स्रोत व वहाव को प्रदर्शित करता है। यदि फर्म के पास चालू दायित्वों के भुगतान के साथ-साथ फर्म की एक वर्षीय संचालन लागतों को पूरा करने के के लिए कितना रोकड़ उपलब्ध है व इनका भुगतान होने के बाद कितनी रोकड़ शेष है, यदि फर्म की वित्तीय व्यवस्था में पिछले वर्ष की तुलना में रोकड़ में वृद्धि हुई है या कमी यह रोकड़ प्रवाह विवरण बताता है।

	रोकड़ के स्रोत (आना)-	**रोकड़ के प्रवाह (जाना)-**
1.	स्थायी दायित्वों में वृद्धि	स्थायी दायित्वों में कमी
2.	स्थायी सम्पत्ति में कमी	स्थायी सम्पत्ति में वृद्धि
3.	चालू दायित्वों में वृद्धि	चालू दायित्वों में कमी
4.	चालू सम्पति में कमी	चालू सम्पत्ति में वृद्धि

Cash Flow Statement For the Year 2021-22			
Mahakoushal Sugar Mills Narsinghpur			
		Rs. In Crore	
S. No.	**Particulars**	**Amount**	**Amount**
A	**Cash Flow from Operating Activities**		
A.1	Net Profit before tax and transfer to general reserve	96.42	
A.2	Depreciation Expense	26.24	
A.3	Interest on Term Loan	7.94	
	Operating Profit before working capital changes		**130.60**
	Adjustments for Change in Working Capital		
A.4	(Increase)/(Decrease in Current assets	-10.13	
A.5	(Increase)/(Decrease in advances & receivables	41.69	
A.6	(Increase)/(Decrease in working Capital Loan	77.71	
A.7	(Increase)/(Decrease in Current Liabilities & Provisions	-13.81	**95.46**
	Net Cash From Operating Activities		**35.14**
B	**Cash Flow from Investing Activities**		
B.1	Sale of Investment	163.18	
B.2	Purchase of fixed assets	-52.8	
B.3	Payment of Long term depts	-35.41	
	Net Cash From Investing Activities		**74.97**
C	**Cash Flow From Financing Activies**		
C.1	Amount raised through share capital	6.78	
C.2	Proceeds from Long term debts	77.71	
C.3	Interest Expense on term Loan	-18.40	
	Net Cash Flow From Financing Activities		**66.09**
D	**NET (Decrease)/Increase in Cash and Cash Equivalents (A+B+C)**		**176.20**
	Cash and Cash Equivalents at the Beginning of the period		29.72
E	**Cash and Cash Equivalents at the End of the period (D+E)**		**205.92**

फर्म के रोकड़ प्रवाह विवरण का परीक्षण करने पर पाया गया कि फर्म के संचालन से लाभ के रूप में 130.60 करोड़ रू. रोकड़ का आना हुआ, वह चालू सम्पत्तियों व दायित्वों में वृद्धि/कमी के परिणामस्वरूप संचालन से लाभ 35.14 करोड़ रू. से प्रवाह हुआ है। इसी प्रकार विनियोग गतिविधियों के माध्यम से रोकड़ के स्रोत व प्रवाह के पश्चात शुद्ध 74.97 करोड़ रू. की रोकड़ में वृद्धि हुई है। इस प्रकार विनियोग गतिविधियों के माध्यम से सभी रोकड़ (स्रोत व वहाव) के पश्चात् शुद्ध 66.09 करोड़ की वृद्धि परिलक्षित हुई है। इस प्रकार रोकड़ प्रवाह की तीनों गतिविधियों A + B+ C के माध्यम से शुद्ध 176.02 करोड़ रू. का रोकड़ प्रवाह हुआ जिसमें इस वर्ष के प्रारम्भ या गत वर्ष के अंत की रोकड़ प्रारम्भिक कोष में 29.72 करोड़ था। परिणामस्वरूप वर्ष 2021-22 के अंत में फर्म के हाथ में कुल रोकड़ 205.92 करोड़ है जो संस्था की रोकड़ की दृष्टि से उचित स्थिति का परिचालन है। इस रोकड़ वृद्धि में फर्म को मुख्य उत्पादन शुगर के अलावा मुख्य उपोत्पाद बगास, प्रेसमड, मोलासिस आदि का भी आनुपातिक योगदान परिलक्षित है। अत: कहा जा सकता है कि उपोत्पादों के विपणन से आय में रोकड़ प्रवाह से सकारात्मक वृद्धि परिलक्षित होती है।

तालिका 1: चयनित चीनी उद्योगों की वित्तीय संरचना में उपोत्पादों की आय का तुलनात्मक विश्लेषण (राशि करोड़ रू. में)

चीनी उद्योग का नाम	**वित्तीय स्थिति**	**चीनी उद्योग का नाम**	**वित्तीय स्थिति**
करेली शुगर प्रा. लिमिटेड	32.25	36.75	69.00
महाकौशल शुगर एवं पॉवर इंडस्ट्रीज लिमिटेड	18.22	16.60	34.82
नर्मदा शुगर प्रा. लिमिटेड	30.87	51.43	82.30
योग -	81.34	81.34	81.34

स्रोत -चयनित चीनी उद्योगों की ऑडिट रिपोर्ट।

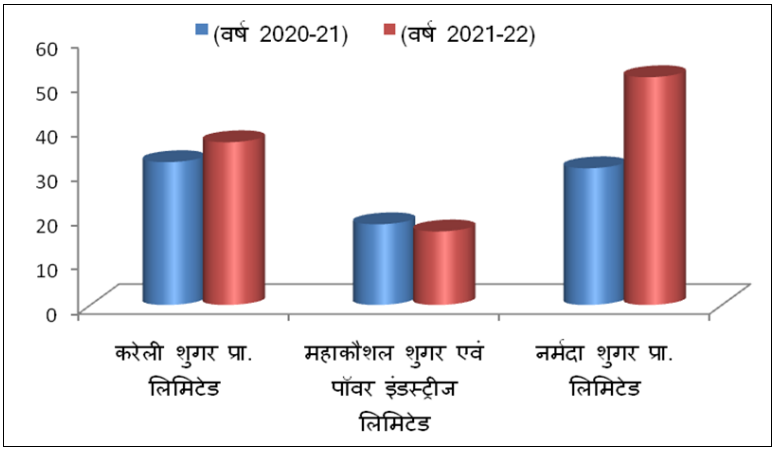

नरसिंहपुर जिले की उपर्युक्त 03 चयनित चीनी उद्योगों की ऑडिट रिपोर्ट के आधार पर प्राप्त आंकड़ों का एकत्रीकरण कर विश्लेषण किया गया है। जिसमें करेली शुगर प्रा. लिमिटेड के वर्ष 2020-21 में 32.25 करोड़ की आय हुई तथा वर्ष 2021-22 में 36.75 करोड़ रू. आय प्रदर्शित हो रही है। इस प्रकार विगत दो वर्ष में कुल आय 69 करोड़ रू. आंकी गयी। इसी प्रकार अन्य चीनी उद्योगों के विगत दो वर्षों की तुलनात्मक वित्तीय संरचना का विश्लेषण किया गया है।

निष्कर्ष:

नरसिंहपुर जिला एक कृषि प्रधान जिला है। यहां की लगभग 75 प्रतिशत आबादी कृषि पर निर्भर है, यहां पर कृषि ही आजीविका का मुख्य साधन माना जाता है। जिले में गन्ना फसल की उत्पादकता भी प्रदेश के अन्य जिलों की तुलना में अधिक होता है। यही कारण है कि जिले में चीनी उद्योगों का विकास हो रहा है । शोधार्थी द्वारा नरसिंहपुर जिलांतर्गत संचालित 03 चीनी मिलों में से महाकौशल शुगर मिल की वर्ष 2021-22 की ऑडिट रिपोर्ट के आधार पर रोकड़ प्रवाह का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि महाकौशल शुगर मिल के रोकड़ प्रवाह की वृद्धि में चीनी मिल से उत्पादित मुख्य उत्पाद शक्कर के साथ उपोत्पाद जैसे बगास, मोलासिस, प्रेसमड आदि का भी महत्वपूर्ण योगदान है ।

संदर्भ सूची:

1. पाण्डेय, प्रो. श्रीधर, आधुनिक भारत का आर्थिक इतिहास, मोतीलाल बनारसी दास दिल्ली, वर्ष 2010।
2. जैन जिनेन्दर कुमार (1992): मध्यप्रदेश में शक्कर उद्योग का आर्थिक अध्ययन, पी. एस. पब्लिकेशन, भोपाल.
3. राव वी.एस. एवं डाबर (1972): मध्यप्रदेश का आर्थिक विकास, म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल.
4. श्रीवास्तव, पी.एल, (2012), मध्यप्रदेश का औद्योगिक विकास, म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल।
5. शर्मा राजेन्द्र (1992): मध्यप्रदेश विकास वार्षिकी, स्वदेश प्रकाशन, भोपाल.
6. वाष्र्णेय पी.एन. (2005): बैंकिग विधि एवं व्यवहार, सुल्तान चंद एण्ड संस, नई दिल्ली.
7. दुबे डॉ.एस.एन. (2003): आर्थिक विकास एवं नियोजन, जबलपुर, सुमित पब्लिकेशन.